संब्रो.वि./यमुना/58-84/39060 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० 1. परिदहन आयुक्त, हरियाणा 2. महा-प्रबन्धक हरियाणा राज्य परिवाहन, यम्नानगर, के श्रीमक श्री धम सिंह चालक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित सामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है

भीर चृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, धीछोगिक विवाद अधिनिमिय, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यान इसके द्वारा सम्कारी अधिसूचना संव 3(14) 84-3-अम, विभाक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनिमिय की धारा र ने प्रधीन गढ़ित अस न्यायालय, अस्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते है, जो कि उनत प्रवन्धकों तथा असिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा संवधित मामला है;

क्या श्री धर्म सिंह चालक की सेवाओं का समापी न्याये चित तथ ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संश्यो.वि./एफ.डी/99-84/39067. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं । माडर्न इन्जीनियरिंग कम्पनी पलाट नं । 5 की सैक्टर-4 बल्लबगढ, के श्रमिक श्री हरीशीय शर्जा तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई गितियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपान इसके हाना सरकारी अधिम् चना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये अधिमूचना सं० 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त अधिनियम की -धारा १ के अधीन-गठित अम-न्यायालय, फरीदानाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम् विवाद में लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बंधित मामला है :--

क्या श्री हरी ग्रीम शर्मा की सेवाग्रों का समापन स्थारोधित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो यह किस राहत का हकदार है ?.

सं० मो.वि./पानी/94-84/39074---वृंकि हरिस्ताणा के राज्यपाल की राये हैं कि मै० ा. णक्तस्ता एण्ट वम्पनी मार्फत पानीपत तीपरेटिव शूगर मिल पाँनीपत (डिस्टीलरी यूनिट) 2. वी पानीपत को-छोप० शूगर मिल (डिस्टीलरी यूनिट) पानीपत, के श्रमिक श्रो सतपाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मीधोगिक विवाद है;

प्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को ग्यायनिर्णाय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, शौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 19 47, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं०१(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1884, द्वारा उक्त मधिनियम की धारा 7 के द्यान गृहत श्रम स्वाधालय, श्रायाका, को विवाद स्त दा एससे सरका धति निवाद करते हैं, जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवाद श्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री सतपाल की सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है?

सं० म्रो.वि./एफं.डी./165-84/39081. च्यंकि सुरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० मीक्षीजन मैटल इण्डस्टीज एन० - म्रोइं० टी०--फरीवाबाव, के श्रमिक श्री निण्वानाष्ट तथा उसरी प्रयन्त्रकों ये विध्य उसमें इसके बाद विधित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल िवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रब, घौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी धृशिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 30 गुन, 1938, है साथ पढ़ते हुये अविस्चना सं 1495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7फरवरी, 1958, द्वारा उनेत अविविध्यम की गांग 7 के सधीन गठित श्रम न्यायात्तय, फरींदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धिस नी चे लिखा, मामलान्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रयवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री विश्वा नाथ की सेवाओं का समापन न्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./160-84/39095---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. सूरमीर टैक्सटाईल मिल, प्रा.लि., 78 की. एक. एफ., फरोबाबाद, के श्रीमक श्री महिन्द प्रनाप तथा उसके प्रबद्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यामिनणीय हेतु निरिष्ट करना बांछनीय समझते हैं

हसतिए, यन यौचीमिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, द्वरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा न्सरकारी अधियूचना सं. 5115-3-श्रम-88/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साय पहने हुए अधियूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठिन अन न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद स्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं, जो 'क उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के दीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संवधित मामला है :--

अया श्री महिन्द्र प्रताप की सेवाध्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हरूदार है ?

मं थी. वि./एफ. डी./158-84/39102.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि में. वेस्ट आटो प्रोडक्टस ठाकुर बाड़ा. पूरानी बुंचा . वेडा राड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री गंगा प्रसाद तथा उसके अवन्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामल में कोई श्रीचोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद के न्यायनिर्णयं हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए. यब. श्रीखोगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठिमूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए प्रधिमूचना सं. 11495-श्रम-84-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रुष्ठिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादयन या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए मिटिष्ट करते हैं. जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है का विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित

ंक्या श्री गुंगा प्रसाद की सेवाओं का समापत स्यायोचिक तथा ठीक-है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सः ग्री वि./जी. जी. एन./129-8:/39123.--चूकि हरियोणा के राज्यपान की राये है कि 1. परिवहन आयुक्त, हरियाणा पण्यीगढ़। 1. जनरस मैनेजर हरियाणा रोडवेज वर्षणाप गुड्यांका के श्रीमक श्री सहर्वार सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के अध्य इसमें उसके वाद जिल्ला मामले में कोई श्रीद्योगिक विभाद है;

म्रोर नृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, आंद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मितियों का प्रयोग करते हुए, जियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा तराकारी अधिमूर्थना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-68/अम/5 // 11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित अन त्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निद्दिन्द करने हुं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है : --

त्रया श्री मतबीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार